GENERAL PSYCHOLOGY
B.A. (Hons & Psy) Part-I, Paper-I

Dr. Ramendra Kumar Singh
HOD of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar)
V.K.S.U. Ara (Bhojpur)
(Bihar)

प्रत्यक्षीकरण का गेस्टाल्ट सिद्धान्त
GESTALT THEORY OF PERCEPTION

मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। उनका सही-सही अध्ययन बहुत हद तक प्रत्यक्षीकरण पर भी निर्भर करता है। इस लिहाज से मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रत्यक्षीकरण को विशिष्ठ स्थान प्राप्त है। प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा कई तरह के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जिसमें गेस्टाल्ट सिद्धान्त को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

गेस्टाल्टवाद का विकास संरचनावाद के विरोध में हुआ। (1912) ई० में जर्मनी में कोफ्का और कोहलर के सहयोग से वर्दाइमर ने गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की नींव डाली। गेस्टाल्ट का अर्थ सम्पूर्ण या समग्र होता है। इस सिद्धान्त की मूल मान्यता यह है कि हम किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकर As a whole करते हैं, न कि first या अंश-अंश के रूप में। वरदाइमर ने इस संदर्भ में Visual Perception पर एक प्रयोग किया। अपने प्रयोग में कोहलर तथा कोफ्का को प्रयोज्य के रूप में रखा। प्रयोज्य को अंधकार की पृष्ठभूमि में प्रकाश की दो स्थिर रेखाओं को बारी-बारी से जलाकर एवं बुझाकर दिखाया गया। दोनों स्थिर रेखाओं को इस प्रकार अगल-बगल दिखाया जाता था कि दोनों रेखाएँ एक साथ पर्दे पर न दिखाई पड़ें। पहली रेखा जब जलती थी तो दूसरी बुझ जाती थी। इसी तरह दूसरी जलती थी तो पहली बुझ जाती थी। जब प्रकाश की दोनों रेखाओं

Scanned By Scanner Go

के बीच जलने एवं बुझने का अंतराल अधिक भी तो प्रयोज्यों को दो रेखाएँ दिखाई पड़ी, लेकिन जब यह अंतराल घटाकर प्रति सेकेंड 15 बार कर दिया गया तो दोनों में गति दिखाई पड़ी। यानी एकही रेखा गतिशील दीख दिखाई पड़ने लगी। वरदाईमर ने इसे Phiphenomenon कहा जिसे हमारी आँखें पकड़ नहीं पाती हैं। वरदाईमर के अनुसार ऐसा उद्दीपन के विभिन्न अंगों का संगठित हो जाने के फलस्वरूप होता है।

गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार हम किसी भी चीज का प्रत्यक्षीकरण समग्र रूप में करते हैं। जब हम एक कुर्सी का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तो पूरी कुर्सी के रूप में करते हैं, न कि उसकी गद्दा, पाँव, रंग के रूप में। उसी तरह एक आदमी का चेहरा देखते हैं तो सम्पूर्ण चेहरा का प्रत्यक्षीकरण करके कहते हैं कि फलाँ आदमी का चेहरा सुन्दर है। यह अलग अलग बात है कि उस व्यक्ति का आँख, नाक, होठ, रंग आदि मिलकर उसे चेहरा बनाते हैं। तब हम उसे सुन्दर या कुरूप कहते हैं। हमारी समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ एक साथ काम करती हैं क्योंकि हमारी इन्द्रियाँ संगठित होकर प्रत्यक्षीकरण कराती हैं। इसलिए किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकर हम टुकड़ों में न करके As a whole के रूप में करते हैं, क्योंकि कोई भी वस्तु अपने गुणों के समुच्चय के रूप में प्रस्तुत होती है तभी उसका एक अलग स्वरूप बनता है। इसकी व्याख्या के लिए गेस्टाल्टवादियों ने संगठन के कुछ नियम दिये हैं जिसकी चर्चा इसके दूसरे पार्ट में की जाएगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान में एक नये युग कि नींव डाली और बताया कि हम किसी भी उद्दीपन का प्रत्यक्षीकरण टुकड़ों या अंश के रूप में न करके As a whole (समग्र/सम्पूर्ण) रूप में करते हैं। इस सिद्धान्त की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

Scanned By Scanner Go

(1.) प्रत्यक्षीकरण संवेदना और उसके अर्थ का योग का परिणाम मात्र नहीं है।

(2.) प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपनों का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। इससे उद्दीपनों की सत्ता ही विलिन हो जाती है।

(3.) प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में उद्दीपनों के अलग-अलग भागों का प्रत्यक्षीकरण योग नहीं बल्कि सम्पूर्ण का होता है।

(4.) प्रत्यक्षीकरण स्वतः संगठित होता है। इसमें पूर्व अनुभव का कोई महत्व नहीं होता है।

(5.) उत्तेजनाएँ एक विशेष उत्तेजना क्षेत्र में होती है। उत्तेजना एवं उत्तेजना क्षेत्र का आपस में विशेष सम्बन्ध होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में गेस्टालवादियों ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन से एक नये युग की सूत्रपात की। उन्होंने द्वारा इसे वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया जो कुछ खामियों के बावजूद सराहनीय प्रयास कहा जायेगा।

5.01.21

Scanned By Scanner Go